# भूमिका

साहित्य और सिनेमा माध्यम रूपान्तरण पर आधारित प्रस्तुत लघु शोध में साहित्य और सिनेमा के अंतर्संबंधों को विस्तृत एवं सूक्ष्म दृष्टि से बताने का प्रयास किया गया है। आज हमारे भारतीय हिंदी सिनेमा को लगभग 104 वर्ष पूरे हो गए हैं। मगर आज भी हमारे भारतीय सिनेमा में गिनी-चुनी ही फिल्में हैं, जो साहित्य पर आधारित हैं और वे सफल हो पाई हैं। इसका क्या कारण है, कि आज सिनेमा में करोड़ों-अरबों की धन-राशि खर्च की जा रही है। उच्च से उच्चको कोटि की तकनिकों का आज इस्तेमाल करके हम व्यवसाय के लिए सिनेमा तैयार कर रहे हैं। हम हर वर्ष लगभग 800 फिल्मों का निर्माण कर रहे हैं। फिर भी आज हम साहित्य आधारित सिनेमा बनाने में असमर्थ दिखते हैं। आखिर ऐसा क्या कारण है कि सिनेमा के शुरूआती दौर में और मध्यकाल में साहित्य आधारित सिनेमा का निर्माण किया जा रहा था। मगर आज निर्देशकों ने साहित्य आधारित सिनेमा को क्यों बनाना छोड़ दिया ? आज मुश्किल से 5% फिल्में साहित्य आधारित सिनेमा पर बनाई जा रही हैं और कई साहित्यकार और साहित्य- प्रेमी फिल्म बनाने और साहित्य-आधारित सिनेमा के समाज से गायब होने पर चिंतित हैं जो स्वयं कई बार ये बीड़ा उठाना चाहते हैं और जो स्वयं साहित्य-आधारित सिनेमा का निर्माण करना चाहते हैं। मैं आशा करता हूँ कि यह लघु शोध ऐसे साहित्य प्रेमियों की समस्याओं को कुछ हद तक हल करने की कुंजी साबित हो सकता है।

इस शोध के प्रथम अध्याय में साहित्य सिनेमा माध्यम रूपांतरण के लिए विशेष संदर्भ में प्रेमचंद की तीन कहानियों (सवा सेर गेहूँ, ठाकुर का कुआं और कफ़न) को लिया गया है और इसका सिनेमाई रूपांतरण 'तहरीर' धारावाहिक के रूप में सम्पूर्ण सिंह कालरा (गुलज़ार) ने अपने

निर्देशन में किया है। किसी साहित्य का फिल्मांकन देखने से पूर्व उसके लेखक और निर्देशक को जान लेना अत्यंत आवश्यक है। इसलिए प्रथम अध्याय में ही 'तहरीर' धारावाहिक के लेखक प्रेमचंद और उसके निर्देशक सम्पूर्ण सिंह कालरा (गुलज़ार) के जीवन और कलाक्षेत्र का संक्षिप्त परिचय है।

दूसरे अध्याय में साहित्य आधारित सिनेमा का इतिहास और उसके वर्तमान की चर्चा की गई है। वास्तव में इसके अंतर्गत सिनेमा का बीज कहाँ से पनपा और उसके एक वृक्ष बनने तक की यात्रा का एक संक्षिप्त वर्णन है और इसके अंतर्गत सिनेमा की रीढ़, कथा और उसकी पटकथा के अंतर्संबंध पर विचार किया गया है। यही नहीं,सिनेमा और कथा की समस्याओं पर भी प्रकाश डाला गया है। साहित्य और सिनेमा दोनों कला के वृहद् क्षेत्र हैं। इसलिए दोनों के कलात्मक पक्ष और प्रस्तुति पर भी विचार किया गया है।

तीसरे अध्याय में कहानी और फिल्म के निर्माण-कला,उसकी प्रक्रिया और उसके रचनात्मक संदर्भ की चर्चा की गई है। इस अध्याय में कथा की और फिल्म के निर्माण के लिए उनके सभी तत्वों का वर्णन है और कथा और फिल्म के तत्वों के साथ इनके निर्माण की प्रक्रिया क्या है? जब साहित्य या किसी भी कहानी को सिनेमा में रूपांतरित किया जाता है तो उसके भीतर कहानी और फिल्म के रूपांतरण, रचनात्मक और उसके निर्माण से मन पर क्या मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है, इन विषयों पर भी चर्चा की गई है। इस पूरी प्रक्रिया के लिए और उसे संक्षेप में समझने के लिए 'तहरीर' धारावाहिक की तीन कहानियों (सवा सेर गेहूँ, ठाकुर का कुआं और

कफ़न) पर भी विचार किया गया है। इन कहानियों के रूपांतरण और रचनात्मक संदर्भ तथा उसके मनोवैज्ञानिक प्रभाव को भी वर्णित किया गया है।

चौथे अध्याय में प्रेमचंद की इन तीनों कहानियों (सवा सेर गेहूँ, ठाकुर का कुआं और कफ़न) की और उसके 'तहरीर' धारावाहिक रूपांतरण की विस्तृत चर्चा की गई है। कहानी और फिल्म में शिल्पगत अंतर क्या है? यही नहीं इस अध्याय में कहानी और उसके फिल्मांकन के मनोवैज्ञानिक प्रभाव का क्या अंतर है, इस पर भी विचार किया गया है|

पाँचवें अध्याय में साहित्य को जब सिनेमा में रूपांतरित किया जाता है तो इस बीच उसे कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस अध्याय में उन समस्याओं की जैसे प्री-प्रोडक्शन (पूर्व प्रस्तुति) की समस्याएँ, फिल्मांकन की समस्याएं मूल कथा संरक्षण की समस्या पर चर्चा की गयी है| वैश्वीकरण और दर्शक दोनों की मांगों का साहित्य और सिनेमा पर क्या असर पड़ता है की चर्चा की गयी है| इस प्रकार इस अध्याय में समस्याओं को संक्षेप में वर्णित किया गया है और साथ ही समस्याओं के साथ समाधान भी बताने का प्रयास किया गया है।

इस शोध का मुख्य रूप से यही उद्देश्य है कि आज सिनेमा बड़े स्तर पर व्यवसाय कर रहा है। मगर आज वो साहित्य-आधारित सिनेमा बनाने में असमर्थ क्यों है? आज सिनेमा इतना परिपक्व होने के बाद भी साहित्य को कैसे नज़र अंदाज़ कर सकता है? 'साहित्य, सिनेमा और समाज का चिंतन', प्रस्तुत शोध उनके लिए उपयोगी साबित होगा जो सिनेमा के निर्माण में इच्छुक हैं और साहित्य में भी अपनी रुचि रखते हैं। यह शोध नवागंतुको को साहित्य सिनेमा रूपांतरण

बताते हुए उसके निर्माण करने की प्रक्रिया भी बताएगा ताकि वह स्वयं भी निर्माण करने का प्रयास कर सके।

प्रस्तुत शोध मेरे लिए एक मार्गदर्शक का कार्य कर रहा है और करेगा, क्योंकि मेरी रूचि साहित्य और सिनेमा दोनों में ही है। मैं सदैव उन सभी का आभारी रहूँगा; जिन्होंने मुझे इस शोध को पूरा करने में सहयोग प्रदान किया। सभी ज्ञानी पुरुषों का, जिन्होंने इस विषय से संबंधित पुस्तकें लिखीं, सम्पादित की और विशेषांक प्रकाशित किये, जिनसे एक ज्ञान-मार्ग प्रशस्त हुआ। इस सूची में अभिभावक अभिषेक, रीतू पहाड़िया, राजेश पहाड़िया के बाद महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय और मेरे शोध निर्देशक डॉ. अशोकनाथ त्रिपाठी जी, जिन्होंने हमेशा मेरी रुचि के अनुसार कार्य करने की स्वतंत्रता प्रदान की और मेरा भरपूर सहयोग किया का भी नाम शामिल है|

सम्पूर्ण हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग (साहित्य विद्यापीठ) जिन्होंने मेरे कार्य और कार्यक्षेत्र को लेकर हमेशा मेरा सहयोग किया ; विभागाध्यक्ष प्रो.कृष्ण कुमार सिंह एवं सभी शिक्षकों ने आर्थिक और मानसिक रूप मेरा सहयोग किया, मेरे कुछ मित्र जिन्होंने हर तरह से मेरी मदद कर मेरे शोध के अंतिम चरण तक मेरा सहयोग किया– कुमार गौरव मिश्रा, नरेन्द्र कुमार, तरुण कुमार, काजल शर्मा, मेघा शर्मा, राकेश कुमार, शाहिद अली, प्रेम कुमार, सचिन तनेजा, हेमलता, राजकुमार, रमन टाकिया, अमित कुमार, पूजा सिंह, दीपक कुमार भारती, सुषमा, नीरज कुमार, रोहित रैवर चंदन कुमार,पंचदेव प्रसाद और उन सभी का तहेदिल से आभार व्यक्त करता हूँ। जिनका नाम यहाँ नहीं लिख पाया हूँ मेरे सहयोगी सदैव मेरे लिए आदरणीय रहेंगे।

**-नीरज छिलवार**